ई–बुलेटिन 2022

शिक्षक पर्व

सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, प्रयागराज

संघटक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त

सितम्बर 2022

शिक्षक पर्व

भारतीय संस्कृति और गुरु शिष्य परम्परा

मुख्य सम्पादक
प्राचार्या
प्रो. लालिमा सिंह

सम्पादक
डॉ मीनू अग्रवाल
डॉ मंजरी शुक्ला

From the Desk of Principal

"Difficulties in your life do not come to destroy you, but to help you realise your hidden potential and power. Let difficulties know that you too are difficult."

Dr. A. P. J Abdul Kalam.

My dear Students and Faculty Members it is the bond between the two of you is that makes the education system breathe life.

To enrich the journey of life it is essential that teachers put the best of their energy, knowledge, talent and experience in sculpting the personality of their students. The students need to develop enthusiasm and inquisitive ness to explore new avenues of learning in due guidance of their teachers. It is the synchrony between the two that would roll the wheel of progress of the civilization.

I congratulate the team of Faculty Members who have contributed in the making of this e-bulletin.

Professor Lalima Singh

Principal

ई–बुलेटिन 2022

शिक्षक पर्व

भारतीय संस्कृति और गुरु शिष्य परम्परा

सम्पादक की कलम से

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अपने पत्रांक **F.2-79/2022(CPPII) dated 25th Aug 2022** में शैक्षिक संस्थाओं से शिक्षक पर्व आयोजन की अपेक्षा की है। इस सन्दर्भ में महाविद्यालय की यूजीसी समिति और आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ ने प्राचार्या के निर्देशन में गतिविधियों के संचालन के दायित्व के साथ ही ई बुलेटिन निकालने का निर्णय लिया। ई बुलेटिन का वर्तमान अंक आपके सामने है। शोध या गहन तत्व पर अपेक्षित ध्यान न देकर छात्र पीढी को भारतीय शिक्षा परम्परा के अनुकरणीय मूल्यों से जोडना इसका उद्देश्य था। हम आभारी है कि सभी संकायों के शिक्षक समूह का सहयोग मिला। बुलेटिन में प्रकाशित शिक्षकों के विचार उनके हैं। यद्यपि एकत्र किए गए, प्रस्तुत किए गए उद्धरित प्रेरक कथाओं, श्लोकों, उद्धरणों या विचारों के ज्ञात अज्ञात स्रोतों का उल्लेख नहीं किया गया है तथापि उन मूल लेखकों या ग्रन्थों या प्रकाशकों के प्रति आभार व्यक्त करतें है। अनेक त्रुटियो और कमियाों के बावजूद छात्र समुदाय को शिक्षक शिष्य सम्बन्धों में मूल्यों के प्रति जागरूक करने मे यह लघु प्रयास सफल हो, इस कामना के साथ,

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु
अर्थात् हमारे मन शुभ संकल्पना से युक्त हों।

करै दूरी अज्ञानता,
अंजन ज्ञान सुदये।
बलिहारि वै गुरु की,
हंस उबारि जु लेय।।

एकलव्य ने मिटटी की प्रतिमा में ही गुरु ढूढ लिया। दत्तात्रेय ने प्रकृति के 24 तत्वों को अपना गुरु माना। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त नाम के सामान्य से बालक को देश का चक्रवर्ती सम्राट बना दिया। पिप्पलाद, वशिष्ठ, विश्वामित्र, आदि गुरुओं के आख्यान आर्ष ग्रन्थों में हैं। समर्थ गुरु रामदास के मार्गदर्शन से ही छत्रपति शिवाजी महाराज ने हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना कर इतिहास की दिशा बदल दी। रामकृष्ण परमहंस जैसे गुरु को पाकर ही स्वामी विवेकानन्द का विवेक जाग्रत हुआ। अज्ञान के अन्धकार में फंसे मानव को बाहर निकालने के लिए गुरु अपनी ज्ञान शलाका से उसकी आंखों में वह अंजन लगाता है जिससे जीवन का वास्तविक उद्देश्य तथा अपनी भावी भूमिका स्पष्ट नजर आने लगाती है।

गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ है,
गढि गढि काढै खोट।
अन्तर हाथ सहार दे,
बाहर बाहर चोट।।

डॉ मीनू अग्रवाल
डॉ मंजरी शुक्ला

भारतीय संस्कृति और गुरु शिष्य परम्परा

ब्रह्माण्ड पुराण में **गुरु के तीन प्रकार** बताए गए हैं

- महागुरु
- आचार्य
- देशिक आचार्य

स्मृतियों में गुरु के दो प्रकार बताए गए हैं–

- आचार्य
- उपाध्याय

गुरु की परिभाषा

गुकार का अर्थ अन्धकार होता है रुकार निरोध करने की क्रिया को कहते हैं।
अतः अन्धकार का निरोध करने के कारण
उसे 'गुरु' कहा जाता है।

–ब्रह्माण्ड पुराण , 4,43,37,

वैदिक कालीन गुरु शिष्य परम्परा

गुरु शिष्य परम्परा भारतीय संस्कृति की विशिष्टता है। जिसके माध्यम से विद्या, व्यवसाय, वास्तु, संगीत, नृत्य, कला कारीगरी पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होकर जीवित रहती है। गुरु मार्गदर्शक होता है जो ज्ञान पिपासु शिष्य के अन्तस को आत्मज्ञान की ज्योति से आलोकित कर देता है। शोपेनहावर ने कहा था – विश्व में यदि कोई सर्वाधिक प्रभावशाली व सर्वव्यापी सांस्कृतिक क्रान्ति आई है तो वह केवल उपनिषदों की भूमि भारत से। जिज्ञासु शिष्यों ने ज्ञानी गुरु के समीप बैठकर उपनिषदों के रूप में दुनिया को जो दिव्य धरोहर दी है उसकी कोई सानी नहीं है। परशुराम, कणाद, वशिष्ठ, विश्वामित्र भारद्वाज, गौतम, अत्रि, सांदीपनी, व्यास द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अगत्स्य आदि ऋषि इस परम्परा के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है जिन्होने अपने शिष्यों का आध्यात्मिक विकास और चरित्र निर्माण कर उन्हें स्वावलम्बी बनाकर जीवन की चुनौतियों का सामना करने के योग्य बनाया। उपनिषदों में कहा गया या विद्या सा विमुक्तये और यह विद्या गुरु के सानिध्य में ही प्राप्त होती है। श्रेय और प्रेम मानव जीवन की दो धाराएं हैं। इन्हें प्राप्त कराने वाली परा और अपरा विद्याएं हैं। श्रेय का चयन करने वाले विद्या सम्पन्न धीर और सांसारिक कामनाओं के प्रति अनासक्त परा विद्या के साधक होते है। सांसारिकता या प्रेम में लिप्त व्यक्ति को अन्धकार में रहने वाला कहा गया। उपनिषदों के अनुसार अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला ज्ञान गुप्त तथा रहस्यमय हैं। श्रद्धावान, समर्पित चरित्रवान शिष्य के प्रश्न करने पर उसकी परीक्षा उपरान्त गुरु उसे सुपात्र जानकर ही यह ज्ञान प्रदान करता था। विनम्र और अनुशासित शिष्य पर ही गुरु की कृपा होती थी। गुरु शिष्य संबंध को रक्त संबधों से बढ़ कर माना गया है। वैदिक काल में शिक्षक का पिता तुल्य स्थान था। ऋषियों को अनादृश्य कहा गया जिसका अर्थ है घोर तप से दिव्यता प्राप्त करने वाले गुरु को समाधिस्थ, वायु के समान सूक्ष्म रूप धारण करने वाले, वचन व कर्म से सत्य का पालना करने वाले सद्गुणों में देवताओं की समानता करने वाला कहा गया। ऋग्वेद में गुरु को वाचस (उच्च ज्ञान से परिपूर्ण) अथर्व व अन्यत्र आचार्य कहा गया। गुरु कोमल हृदय, मोह रहित, शास्त्रज्ञ, सात्विक, आचारवान सुशील, श्रद्धापूर्ण, कृतज्ञ, सत्यवादी, कर्तव्यनिष्ठ, मधरभाषी आत्मनिग्रही थे। शिष्य की गुरु के गहन पांडित्य और निष्कलंक चरित्र में अटूट श्रद्धा होती थी। इसके अतिरिक्त उनका धाराप्रवाह वक्तृत्व, मानसिक सजगता, कठिन शब्दों के सहज स्पष्टीकरण की क्षमता, विषय का विद्वान होने के साथ–साथ शिक्षण में दक्ष होना अपेक्षित था। ऐसा गुरु अपने शिष्यों की न्यूनता का परिष्कार कर उनके आचरण को परिमार्जित कर गरीब शिष्यों के आवास, वसन और भोजन की व्यवस्था कर समान भाव से शिक्षा प्रदान कर आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास कर जीवन के सत्य का साक्षात्कार कराता था। गुरु शिष्य संबंध स्नेह व सम्मिलन के उच्च स्तर स्तर पर आधारित था। जहाँ दोनों एक दूसरे के कल्याण और तेज की प्रखरता वृद्धि के आकांक्षी थे। वे साथ–साथ प्रार्थना करते थे – **ओम् सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहे , तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।** तत्कालीन समय में 12 वर्षीय सामान्य पाठ्यक्रम या एक वेद का अध्ययन करने वाले शिष्य स्नातक, 24 वर्षीय पाठ्यक्रम या किन्हीं दो वेदों का अध्ययन करने वाले वसु, 36 वर्षीय पाठ्यक्रम या तीन वेदों का अध्ययन करने वाले रुद्र और 48 वर्षीय पाठ्यक्रम या चारों वेदों का अध्ययन करने वाले आदित्य कहलाते थे। जिन्हें किसी वेद के अंग विशेष का ज्ञान कराया जाता था उन्हें चरण और जिनकों चारों शास्त्रों दर्शन, पुराण व्याकरण और राजनियमों की शिक्षा दी जाती थी। उन्हें चतुत्प भी कहा जाता था। शिष्यों की योग्यता ही उनका प्रमाणपत्र थी। शिष्यों की शिक्षा पूरी होने पर समावर्तन संस्कार में यज्ञवेदी के समक्ष मंत्रों से देवताओं की आराधना उपरान्त गुरु दीक्षान्त भाषण देते थे। तैत्तरीय उपनिषद में इस प्रकार के दीक्षान्त भाषण का उल्लेख है।

वर्तमान शिक्षा और वैदिक कालीन विद्या में शिष्य के कल्याण का भाव समान था किन्तु वर्तमान शिक्षा भौतिकता या अभ्युदय की प्राप्ति को समर्पित है जबकि विद्या निःश्रेयस या आत्मा से साक्षात्कार हेतु भी। जिसे भारतीय वांगमय में मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य कहा गया।

डॉ मंजरी शुक्ला, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग,
तथा संयोजक, आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ

गुरु और शिष्य

गुरु का शिष्य जीवन में अधिक महत्व है। गुरु शिष्य के जीवन में वह व्यक्ति होता है, जो उन्हें अच्छी शिक्षा के साथ बहुत सी अन्य महत्वपूर्ण चीजों को सिखाता है। एक गुरु अपने विद्यार्थियों के लिए बहुत अधिक मायने रखता है। वह उनके जीवन में विकास की प्रारम्भिक अवस्था से हमारे परिपक्व होने तक बहुत अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह उन्हें और उनके भविष्य को देश के जिम्मेदार नागरिक बनाने की ओर मोड़ देते हैं।

गुरु का स्थान ईश्वर के ऊपर – गुरु, गुरु, गुरु, टीचर और मास्टर ये कुछ शब्द हैं जो हमें शिक्षा के क्षेत्र में देखने और सुनने को मिलते हैं और इनके साथ ही शिष्य, शिष्य, स्टूडैन्ट और चेला शब्द भी देखे और सुने जा सकते हैं। भारतीय परंपरा के अनुसार गुरु और शिष्य से बात प्रारंभ की जाये तो अच्छा रहेगा।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पांय। बलिहारी गुरु आपने, जिन ग्रोविंद दियो मिलाय।।

उपर्युक्त पंक्तियों में शिष्य संशय में है कि भगवान और गुरु दोनों खड़े हैं किसके पाँव छूने चाहिएँ, तभी उसी शिष्य को आभास हुआ कि गुरु के कारण ही भगवान के दर्शन का सौभाग्य मिला है, पहले गुरु के पाँव छू लेने चाहिएँ। कहने का यह अभिप्राय है कि यह गुरु का पद भगवान् से भी ऊँचा माना गया है। निष्ठावान गुरु ही शिष्य के जीवन में सुधार सकता है और गुरु के द्वारा ही शिष्य जीवन में शिखर को छू पाने में सफल हो सकता है। गुरु और शिष्य दोनों के मन में भावना का होना अति आवश्यक है। एक ओर तो बेचारा गुरु पूरे मनोवेग से शिष्यों को पढ़ाने का प्रयास करे और दूसरी ओर शिष्यों का ध्यान अन्य बातों में लगा रहे तो न गुरु को हो पढ़ाने में आनंद आयेगा और न शिष्यों का ही भला हो पायेगा।

प्राचीन काल से गुरु का महत्व – शिष्य को भी ज्ञान अर्जन के लिए सम्पूर्ण समर्पण भाव से ध्यान देने की ही आवश्यकता होती है, तभी जीवन में उन्नति प्राप्त हो सकती है। प्राचीनकाल में शिष्यों का समर्पण एक उदाहरण बनकर आज भी हमारे सम्मुख है। गुरु द्रोणाचार्य पांडवों को भनुर्विद्या में निपुण कर रहे थे और भोल का बालक एकलव्य गुर द्रोणाचार्य द्वारा पाण्डवों को सिखायी जा रही धनुष विद्या को दूर खड़ा देखा करता था। एक ही मन से द्रोणाचार्य को अपना गुरु स्वीकार लिया और वह भी धनुप का स्वतरू ही अभ्यास करने लगा। पारंगत होने पर एकलव्य ने जब अपनी विद्या का प्रदर्शन किया तो द्रोणाचार्य ने एकलव्य से उसके गुरु का नाम जानना चाहा। तब एकलव्य ने बताया कि मैंने मन से आपको गुरु स्वीकार कर यह धनुप विद्या स्वयं हो सीखी है। इस पर गुरु दक्षिण में एकलब्य ने अपने सीधे हाथ का अँगूठा काटकर द्रोणाचार्य को गुरु दक्षिणा में भेंट कर दिया। यही नहीं मुनि वशिप्ठ और विश्वामित्र ने राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न को शिक्षित किया और संदीपन गुरु ने श्रीकृष्ण को ज्ञान के साथ–साथ सहज और सरल जीवन जीने का पाठ भी पढ़ाया। गुरु, गुरु या गुरु कुम्हार की भाँति कहे गये हैं, जिस प्रकार कुम्हार अपनों गीली मिट्टी को जो चाहे आकार देने में सक्षम होता है उसी प्रकार गुरु गुरु का गुरु अपने शिल्प को आकार दे सकता है। अरस्तू ने अपने शिष्य सिकन्दर को विश्व जीतने के लिए उकसाया तो चन्द्रगुप्त को चाणक्य ने शिक्षित करके देश का इतिहास ही बदल दिया।

शिष्यों पर गुरु का प्रभाव –छोटे बच्चे के मन पर गुरु का जैसा गहरा प्रभाव पड़ता है, वैसा किसी अन्य का नहीं पड़ता। इसलिए गुरु का आदर्शवान होना परम आवश्यक है। गुरु ही ऐसा एक केद्ध–बिन्दु है जहाँ से बौद्धिक परम्पराएँ तथा वैज्ञानिक और तकनीकी कुशलता एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को संचारित करती हैं। यह गुरु या गुरु ही होता है जो सभ्यता के दीपक को प्रज्ज्वलित करने में अपना योगदान करता है। गुरु, गुरु या गुरु व्यक्ति का मार्ग दर्शन ही नहीं करता, अपितु समूचे राष्ट्र का भाग्य निर्माता भी होता है। गुरु यदि योग्य होगा तो शिष्य भी योग्य ही बनेंगे। गुरु के व्यक्तित्व का प्रभाव शिष्य पर निश्चित रूप से पड़ता है। चरित्रवान और नीतिवान गुरु के शिष्य भी चरित्र और नीति में प्रवीण होंगे। शिक्षण, निरीक्षण, मार्गदर्शन, मूल्यांकन और सुधारात्मक कार्यों के साथ–साथ योग्य गुरु ही विद्यार्थियों, अभिभावकों और समुदाय से सदैव अनुकूल सम्बन्ध स्थापित करने के दायित्व को भी निभाता है। गुरु द्वारा शिक्षित शिष्य जब परीक्षा में सफल होते हैं तो सबसे अधिक गर्व गुरु को ही होता है।

डॉ. हरीश कुमार सिंह ,शिक्षाशास्त्र विभाग, असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय, ,प्रयागराज

Digital Natives in Digital Era

India had remained a land of tradition and its purest form had been seen in the teacher-student relationship in ancient India. Gradually, this situation has been changed. There is a sharp decline in the amount of respect received by the teachers from the society in general and from the students' fraternity in particular. There can be innumerous reasons for this decline, but in this write up, we are trying to see it from a digital angle. The present world is an altogether new digital world. The students become digital natives here and the teacher has turned into digital immigrants. Now the teacher has not remained the sole source of knowledge provider. Students are free to learn from anywhere and from anyone at any time.Students have been termed now as digital natives because they are the real natives of this digital world. They have been born and brought up with the waves of digitalization. While digitalization is a new phenomenon for the teachers, hence they can be termed as digital immigrants. Digitalization has its impact on each and every aspect of our lives, be it the way we communicate, we live or we teach. Generally, student seems to be more skilled to handle digital gadgets than their teachers and guardians in present time. However, exceptions are everywhere.

To hold the students' attention and interest in classrooms and in general, a teacher has to have become digitally skilled. Here lies the need of CPD, continuous professional development on the part of teacher. When teachers become digitally skilled, upgraded themselves to handle the unprecedented challenges of digital world, then they can serve better in classroom to deal with the immense potentialities and curiosities of the digital natives. This will result in the achievement of students' learning outcomes in a better way. This can be resulted in the production of such graduates who become industry ready and at par with global standards of 21st century. NEP 2020 has also emphasized over the same. This can be achieved by two fold remedies, first one is to provide required infrastructure and training to teachers for it and the second one is to overcome the psychological resistance on the part of such teachers who think that traditional chalk and talk method is the only best way to teach and cannot be and must not be modified with the bit of digitalization in any way. This can be concluded in a way that being digital is not the only solution but it can be and must be included in the teaching learning scenario of 21st century classrooms, so that it can be in sync with the natural instinct of the digital natives. It can be resulted in the better classroom interaction and a better teacher-student relationship, we can say. So, for in anticipation of betterment, at least be partially digital to deal with digital natives in the digital era in a better way.

Dr. Rashmi Singh
Assistant Professor, Department of Education

Changing Teacher and Student Relationship in Digital Era

In ancient period Guru-Shishya parampara was pervading in the education system in the Gurukulas. It was the system where the pupils were sent to the Gurukulas where they stayed for a longer period and developed a deep bond with their gurus. Guru had supreme place in teaching –learning process.As the Guru was supposed to be the sole authority of imparting knowledge.

With the passage of time and invasion of technology, the role of teacher and students are changing and their relationship is also being changed. Teachers' role has been shifted from mere a preacher and the sole owner of the knowledge to a guide, mentor and facilitator, as the technology has opened up the various sources and platforms for knowledge sharing.Students are getting more smart and are well equipped with the latest technology thus knowledge gap is narrowing rapidly between the teacher and the students.

Besides this sudden outbreak of the pandemic Covid-19 has increased the use of the technology at a noticeable rate, it has brought vast changes in the field of education too. So many gadgets, applications, software and digital tools have been developed to assist the teachers and students.Digitalization, social media, OER and other platforms providel ots of opportunities and study material to be grabbed by the students. Students from any corner of the world can interact with their teacher in synchronous and asynchronous manner, physical presence of the teacher and student is not required in the virtual world/virtual classroom.Several platforms are there to present number of courses of a particular field or topic. A student is free to enroll in these courses and learn according to their time, interest and pace. Yoga, fitness, cooking, dancing, hobby classes, tuition application like vedantu, Byju's and many more apps like this are replacing the teachers and giving freedom to the students at a great level. Gadgets are becoming Gurus in digital era. This new trend of teaching-learning is definitely having many advantages still they lack the personal touch which was possible only in physical mode.

Now the question is for the teachers or Gurus what type of role is being expected from them? New normal is demanding much more from them, in order to maintain their identity and survival they have to be more updated and more skilled with the changing scenario as now they are not enjoying the sole ownership of imparting knowledge to the students.

Dr. Neeta Sahu, Assistant Professor
Department of Education, SSK

भारतीय संस्कृति में गुरु–शिष्य परम्परा

भारतीय संस्कृति में गुरु–शिष्य परम्परा की विशेष महत्व है, जो अत्यन्त उत्कृष्ट कोटि की परम्परा रही है। भारतीय सभी सस्कृति में से संगीत का स्थान प्राचीन काल से ही अत्याधिक सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, तथा प्राचीन काल से ही संगीत शिक्षा का आधार गुरु–शिष्य परम्परा थी, जिसमें गुरू का स्थान सर्वोपरि बताया गाया है। भारतीय संस्कृति में संगीत की प्रत्येक विधा की शिक्षा में गुरू–शिष्य का जो भावनात्मक सम्बन्ध दृष्टिगत होता हैं, वह किसी अन्य विषय में अपेक्षाकृत कम ही मिलता है। शिष्य की गुरू के प्रति श्रद्धा एवं गुरु शिष्य का पुत्रवत् प्रेम तथा तालीम इस कला के प्रति भावनात्मक दृष्टिकोण को उजागर करती है।

प्राचीन काल के ग्रन्थों में आदर्श आचार्य (गुरु) के निम्न लिखित लक्षण बतायें गए हैं :– ज्ञान (विषय का बोध), विज्ञान (क्रिया निष्पादन), करण (कंठ या हस्त जो गायन–वादन के माध्यम हैं उनके प्रयोग में कुशलता, वचन (प्रवचन में विस्मरण न हो), सिद्धि (विभिन्न देशो की रूचि, प्रकृति, कुशलता आदि के भेदों को समझकर प्रयोग करने की समझदारी), निष्पादन (शिष्य के स्वभाव अर्थात् बुद्धि के अनुरूप उपदेश देना)। कबीरदास, नानक देव तथा गोरखनाथ आदि सभी ने गुरू की महिमा का व्याख्यान किया हैं।

'गुरुब्रम्हा, गुरुविष्णु, गुरुदेवो महेश्वराः। गुरूर्साक्षात् परम्ब्रम्ह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।''

इस श्लोक द्वारा परम्परागत गुरू का अनन्य महत्त्व स्पष्ट होता है। गुरू को साक्षात भगवान का ही प्रतीकात्मक रूप दिया गया है। गुरू–शिष्य का रिश्ता–विश्वास, श्रद्धा, भावना, कर्तव्य तथा सामंजस्य पर आधारित रहता है। गुरु के बिना शिष्य कों मान्यता नहीं मिलती और शिष्य के बिना गुरू को प्रसिद्धि प्राप्त नहीं होती। गुरू के प्रति पूर्ण श्रद्धा, गुरू की क्षमता से पूर्ण विश्वास तथा गुरू के प्रति पूर्ण समर्पण एवं आज्ञाकारिता अनुशासन शिष्य का सबसे महत्वपूर्ण गुण माना गया है, तथा इसी अटूट सम्बन्ध के कारण ज्ञान सम्पदा में वृद्धि होती है। गुरू संस्कृत भाषा का शब्द हैं जिसका अर्थ है अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करने वाला। गुरू और शिष्य एक दूसरे के पूरक है, यदि शिष्य है तो गुरू है तथा गुरू है तो शिष्य है। आचार्य भरतमुनि नें शिष्यों में भी 6 गुणों का होना आवश्यक बताया है :

मेधा स्मृति गुंणश्लाधारागः संघर्ष एवं च। उत्साहश्च षडैवैत शिष्यस्यापि गुणस्मृताः।।

अर्थात् मेघा, स्मृति, विद्या प्राप्ति में लगन, कार्य करने में श्रद्धा, विषय ज्ञान में स्पर्धा का भाव तथा सदा उत्साही बने रहना। संगीत की गुरू–शिष्य परम्परा में 'गंडा बंधित शिष्य' कों ही विधिवत शिष्य होना कहा गया है, ऐसें शिष्यों का एक मात्र ध्येय होता है, अपने गुरू की भाँति सुयोग्य शिष्यों का निर्माण करना। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में गुरू–शिष्य परम्परा का विशेष महत्व हैं।

डॉ. पार्थ डे, संगीत वादन विभाग, असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय, ,प्रयागराज

नई शिक्षा नीति में शिक्षक का स्वरूप

भारतीय ज्ञानियों के अनुसार जिस व्यक्ति की आत्मा से दूसरी व्यक्ति की आत्मा में शक्ति का संचार हो वह गुरु कहलाता है। इसके लिए देने वाले मे शक्ति और लेने वाले में ग्रहण करने की योग्यता अपेक्षित है। शिष्य के चित्त को गतिशील कर उठाना गुरु की अपनी साधना का अंग है प्राचीन गुरुकुलों से लेकर टैगोर की शांति निकेतन तक इस बात के अचूक प्रमाण मिलते हैं। शिक्षा और शिक्षक दोनो ही मिलकर किसी भी देश के मानव विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते है। लगभग 34 वर्षों से गतिमान हमारी शिक्षा व्यवस्था में कई प्रकार की त्रुटियां पनपती जा रही थी शिक्षक का दायित्व भी एक प्रकार से सूचना प्रदाता का रूप में होता जा रहा था। फलस्वरूप सरकार ने शिक्षाविदों और बुद्धिजीवियों के साथ गहन चिंतन के बाद नई शिक्षा नीति 2020, नामक दस्तावेज पारित किया। इस एजेंडे का मुख्य उद्देश्य है 'भारत को वैश्विक ज्ञान की महाशक्ति बनाना है'। इस उद्देश की प्राप्ति तभी हो सकती हैं जब स्कूलों और शिक्षण संस्थाओं में प्रशिक्षित और समर्पित गुरु या मेंटर उपलब्ध हो। इस नई शिक्षा नीति में शिक्षक को स्वरूप को क्रमश तीन भागों में बांटकर देख सकते है .... शिक्षक, शिक्षक शिक्षा के लिए दृष्टिकोण और शिक्षक शिक्षा। शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि व प्रकृति शिक्षक शिक्षा क्षेत्र में लाया गया महत्वपूर्ण कदम है। क्योंकि वर्तमान में धीरे धीरे शिक्षक की भूमिका लिपिकीय कार्यों और पाठ्यक्रम के संचालन और परीक्षा आयोजित करवाने तक सीमित होती जा रही थी। इस नई नीति में शिक्षको की भूमिका पढ़ने में सहयोग देने की होगी। इसमें बहु–विषयात्मक शिक्षा एवं नए स्कूली ढ़ावा देना इस नीति का एक महत्वपूर्ण सुझाव है। इस शिक्षा नीति में शिक्षक का कर्तव्य होगा की वह सिर्फ सूचना प्रदाता न रहे बल्कि नई समावेशी शोधपारक शिक्षा को बढ़ावा दे। जिससे भारत के पास भी पेटेंट की संख्या बढ़ाने में मदद करेगी। नई शिक्षा नीति के अनुप. ालन के लिए कई नियामक संस्थाएं बनाई जाएंगी। इसके साथ ही विश्वविद्यालयों और शिक्षा जगत से जुड़े लोगों की जिम्मेदारी होगी कि वह अधिक से अधिक लोगों को जागरूक करें और इसके क्रियान्वयन के लिए अपने आपको तैयार रखें। अनुसूचित जाति जनजाति महिलाएं एवं अन्य दूरदराज के लोगों के लिए इसमें विशेष फंड की व्यवस्था की गई है। स्कॉलरशिप प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल बनाया गया है जिससे छात्र स्कॉलर से संबंधित अपनी समस्त समस्याओं का समाधान पा सकेंगे। भारत सरकार राज्यों के साथ मिलकर जीडीपी का 6: शिक्षा में खर्च करेगी यह एक स्वागत योग्य निर्णय है। गुणवत्ता और पारदर्शिता के द्वारा 100: छात्रों की इसमें भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। शिक्षकों के ऑनलाइन प्रशिक्षण के लिए स्वयं दीक्षा जैसे प्रौद्योगिक प्लेटफार्म के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि मानकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रमों को कम समय के भीतर अधिक शिक्षकों को मुहैया कराया जा सके। इस प्रकार यह परिलक्षित होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मूल उद्देश्य यह है कि अच्छे मनुष्यों का विकास करना जो कि तर्कसंगत विचार के साथ ज्ञान को अपनी ताकत नहीं सद् गुण समझे। इन्ही विचारों के साथ जब हम आगे बढ़ेंगे तभी भारत ज्ञान की महाशक्ति रूप में आगे बढ़ेगा, और हमने जो वैश्विक गुरु बन ने का सपना देखा है वह भी साकार हो सकेगा।

डॉ. विनीता मिश्रा असिस्टेंट प्रोफेसर मध्यकालीन इतिहास विभाग

मध्यकालीन सन्तों की दृष्टि में "गुरु" का महत्व

"अक्षरं परमं ब्रह्म ज्योतीरूपं सनातनम्। गुणातीतं निराकारं स्वेच्छामयमनन्तजम।।"

'गुरू 'शब्द में ही गुरू की महिमा का वर्णन है।' गु 'का अर्थ है –अंधकार और 'रू'का अर्थ है –प्रकाश। इसलिए गुरू का अर्थ है:–अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला अर्थात जीवन में सफलता हेतु विद्यार्थी का उचित मार्गदर्शन करने वाला ही सच्चा गुरू होता है। गुरू शिष्यों का मार्गदर्शन करता है और शिष्य को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए हमारे शास्त्रों में कहा गया है;– ***गुरुर्ब्रह्मा ग्रुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।*** प्राचीन काल से ही गुरू की आज्ञा का पालन करना शिष्य का परम धर्म होता था। प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली में वेदों का ज्ञान व्यक्तिगत रूप से गुरू द्वारा मौखिक शिक्षा के माध्यम से शिष्यों को दिया जाता था। गुरू शिष्य का दूसरा पिता माना जाता था एवं प्राकृतिक पिता से भी अधिक आदरणीय था। ***एकमप्यक्षरं यस्तु गुरुः शिष्ये निवेदयेत्। पृथिव्यां नास्ति तद् द्रव्यं यद्दत्वा ह्यनृणी भवेत।।*** यदि गुरू शिष्य को एक अक्षर का भी ज्ञान दे , तो उसके बदले में पृथ्वी का ऐसा कोई धन नहीं, जिसे देकर गुरू के ऋण से मुक्त हुआ जा सकें।जो मानव गुरू मिलने के बावजुद प्रमादी रहे, वह मूर्ख ,पानी से भरे हुए सरोवर के पास होते हुए भी प्यासा, घर में अनाज होते हुए भी भूखा और कल्प वृक्ष के पास रहते हुए भी दरिद्र है। मध्यकाल के सन्त संत कबीर जी कहते हैं– ***"गुरू बिन माला फेरता,गुरू बिन करता दान। कहे कबीर निहफल गया गावहि वेद पुरान।। "*** संत गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं –***भाई रे गुरू बिनु गिआनु न होइ। पूछहु ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोइ।।*** यदि कोई ब्रह्मा के सामान सृष्टि का सृजन करने की समर्थ प्राप्त कर ले, या शिव के समान सृष्टि संहार करने की शक्ति प्राप्त कर ले; परन्तु गुरू के बिना भवसागर से पार नहीं हो सकता। यहाँ तक कि गुरू की शरण में गए बिना बहुत शक्ति समर्थ प्राप्त कर लेने पश्चात भी विषय विकारों का त्याग करना मुश्किल है। तुलसीदास यहाँ तक कहते हैं –

" गुरू सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होति।" अर्थात गुरू के स्मरण मात्र से ही अंतरात्मा में दिव्य दृष्टि की प्राप्ति हो जाती है। नानक देव जी कहते हैं कि, ब्रह्मा, नारद, वेद व्यास किसी से भी पूछ लो गुरू के बिना कल्याण और, ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए हम ऐसे पूर्ण गुरु की खोज करें, जो हमारी दिव्य चक्षु को खोलकर हमें दीक्षा के समय परमात्मा का दर्शन करा दे। श्री गुरू राम दास जी कहते हैं कि ,गुरू के बिना घोर अंधेरा है। गुरू के बिना हमें सत्य की समझ नहीं आ सकती है और न ही चित्त की स्थिरता की प्राप्ति हो सकती हैं, न ही मुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। मनुष्य का जीवन अंधकार से ग्रस्त है और गुरू की प्राप्ति के बिना असहाय है। श्री गुरू अमरदास जी कहते हैं :– ***"जे लख इसतरीआ भोग करहि नव खंड राजु कमाहि। बिनु सतगुर सुखु न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि।।"*** अर्थात कितने भी संसार के भोगों को भोग लो या राज्य को कितना भी विस्तृत कर लो, सारी पृथ्वी का राज्य भी भोग लो, लेकिन सतगुरू की शरण के बिना न तो आवागमन से छुटकारा हो सकता है और न ही सुख शांति की प्राप्ति हो सकती हैं। श्री गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं कि,– ***"सासत बेद सिम्रिति सभि सोधे सभ एका बात पुकारी। बिनु गुर मुकति न कोऊ पावै मनि वेखहु करि बीचारी।।"*** अर्थात सभी स्मृति, शास्त्र, वेद कहते हैं कि बिना गुरू के मुक्ति असंभव है। कितना भी सोच विचार कर देख लो, मुक्ति की प्राप्ति के लिए गुरू की शरण में जाना ही पड़ेगा। जायसी कहते हैं –***"बिन गुरू पंथ न पाईअ,भुलै सोई जो मेट।"*** अर्थात बिना गुरू के मार्ग नहीं मिलता ,जो इस नियम को नहीं मानता है,वह भटक जाता है। मंझन कहते हैं–***"गुरू के वचन परम् पद पावै। सतगुरु हो सो ज्ञान लखावै।।"*** दादूदयाल कहते है –***'दादू गुरु परसाद बिन क्यों जल पीवै आइ।'*** इन सन्तों के विचारों से स्पष्ट होता हैं कि एक सच्चे गुरू का शिष्य के जीवन में बेहद महत्वपूर्ण स्थान है।एक गुरू को धन या किसी उपहार का मोह नहीं होता है।वह केवल सम्मान का भूखा होता है।उसका सम्मान,उपहार आज्ञाकारी शिष्य होता है।शिष्य की सफलता पर सबसे अधिक आनन्दित गुरु होता है और गर्व का अनुभव करता है। अतः सदैव एक सच्चे ,ज्ञानी गुरु का सानिध्य प्राप्त करना चाहिए।

–डॉ शिवशंकर श्रीवास्तव, सहायक प्रोफेसर, मध्यकालीन इतिहास,
एस.एस.खन्ना महिला महाविद्यालय, प्रयागराज।

भारतीय संस्कृति एवं गुरू शिष्य परम्परा

गुरु शिष्य परम्परा आध्यात्मिक पज्ञा का नई पीढियों तक पहुचाने का सोपान । भारतीय संस्कृति में इस परम्परा के अन्तर्गत गुरु अपने शिष्य को शिक्षा देता है, शिष्य अपने शिष्य को गुरु बनकर शिक्षा देता है,यही परम्परा आगे चलती रहती है। यह परम्परा किसी भी क्षेत्र में हो सकती है, जैसे विज्ञान, कला,संगीतया आध्यात्म, इस क्षेत्र की कोई सीमा नही हैं।"गु" शब्द का अर्थ है अंधकार (अज्ञान) और "रू" का अर्थ है प्रकाश ज्ञान, अर्थात अज्ञान को नष्ट करने वाला जो ब्रह्मा रूप प्रकाश है वह गुरु है। भारतीय संस्कृति में गुरु को ईश्वर से भी ऊपर माना गया है "

''गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वरो गुरु साक्षात् परम ब्रह्म तस्मै श्री गुरवै नमः''

गुरू को साक्षात शंकर भी माना गया है। परन्तु उन्हे भी गुरु की आवश्यकता है। श्री रामचरित मानस में कहा गया है– **गुरू बिन भवनिधि तरइ न कोई । जौ विरचिं संकर सम होई।।** भगवान शंकर के बराबर ज्ञानी होने पर भी बिना गुरु के कोई भवनिधि से पार नही हो सकता। गोस्वामी तुलसीदास ने भी मानस की रचना **"बंदउ गुरू पद पदुम परागा"** से शुरू की है। प्राचीन काल में गुरू और शिष्य के संबधो का आधार था, गुरु के प्रति श्रद्वा एवं विश्वास, गुरु का शिष्यो के प्रति ज्ञान बांटने का निःस्वार्थ भाव । गुरू के प्रति पूर्ण समर्पण आज्ञाकारिता एवं अनुशासन शिष्य का महत्वपूर्ण गुण माना गया है। गुरु एवं शिष्य के बीच केवल शाब्दिक ज्ञान का ही आदान प्रदान नहीं होता था बल्कि गुरू अपने शिष्य के संरक्षक का भी कार्य करता था। उसका कभी अहित सोच भी नही सकता। यही विश्वास गुरु के प्रति अगाध श्रद्वा और समर्पण का कारण रहा है। इसीलिये कहा गया कि

गुरू गोविन्द दोउ खडे काके लागू पॉव, बलिहारी गुरू आपने, जिन गोविन्द दियो बताय।।

अपने गुरु का अपमान कभी नही करना चाहिए, चाहे शिष्य गुरु से भी अधिक गुणी हो।

कागभुशुण्डि को भी ज्ञान का अभिमान हो गया था और उन्होने गुरू का अपमान कर दिया, गुरु को रंचमात्र भी रोष नही हुआ, परन्तु भगवान शंकर से यह सहन नही हुआ और उन्होने श्राप दे दिया परन्तु वर्तमान परिपेक्ष्य में यह भावना विलुप्त होती जा रही है, अतः गोस्वामी तुलसीदास जी को मानस में कलियुग की महिमा में लिखना पड.।

गुरू सिष बधिर अंधका लेखा।
एक न सुनइ एक नहि देखा।।
हरइ शिष्य धन सोक न हरई।
सो गुर घोर नरक महुँ परई।।

अतः हमें अपनी परम्पराओं का आदर करते हुए पुराने मूल्यों की स्थापना करना है। तभी **"सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु। सहवीर्य करवावहै ,तेजस्विनावधीमस्तु मां विद्विषावहै।** सार्थक होगा ।

डॉ आलोक मालवीय, असिस्टेंट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग

भारतीय संस्कृति और गुरु शिष्य परम्परा

भारतीय संस्कृति में आदि काल से ही महान गुरु शिष्य परंपरा चली आ रही है। गुरु को ईश्वर के समकक्ष माना गया है। गुरु शिष्य के जीवन में उसके संरक्षक के रूप में विद्यमान होता है। गुरु शिष्य को ज्ञान प्रसारित करता है जिसके द्वारा शिष्य अपने व्यक्तित्व के निखार के साथ–साथ अपने आप को भावी जीवन के लिए भी तैयार करता है, अपना भविष्य सँवारता है। गुरु शिष्य के लिए ऐसा व्यक्तित्व है जिसके सान्निध्य मात्र से ही शिष्य स्वयं को अभिप्रेरित हुआ पाता है। गुरु से प्रेरणा पाकर गुरु की शिक्षा को धारण करते हुए मूल्यों को आत्मसात करता है। गुरु शिष्य को सही राह दिखाता है, भटकने से बचाता है। जीवन में किस मार्ग पर चलना शिष्य के लिए श्रेयस्कर होगा यह बताता है। मार्ग में आने वाली बाधाओं की जानकारी देता है तथा उन बाधाओं को पार करने की तथा सामना करने की समझ, क्षमता एवं ऊर्जा के लिए प्रेरणा प्रदान करता है गुरु शिष्य के संपूर्ण जीवन काल में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से उसके साथ विद्यमान रहता है। गुरु वह नेता है जिसके पीछे शिष्यों का एक बड़ा समूह ज्ञान, तर्क, समझ रुचि एवं क्षमताओं के साथ उसका अनुसरण करता है।

गुरु शिष्य की महान परंपरा पर काल का प्रभाव पड़ता रहा, किंतु किसी भी दशा में ना तो गुरु की महत्ता कम हुई ना ही शिष्य का गुरु के प्रति सम्मान। वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था से आरंभ कर आज हम नई शिक्षा नीति 2020 के युग में पहुंच चुके हैं। समय के बदलाव के साथ अवश्य ही सामाजिक परिवर्तन हुए हैं। मूल्यों में गिरावट आई है। आर्थिक, राजनैतिक परिप्रेक्ष्य परिवर्तित हुए हैं। ऐसे में हमारे देश में नई शिक्षा नीति क्रांतिकारी परिवत. र्नों के साथ आई। इसमें विशेष तौर पर गुरु एवं शिष्य की भूमिका अलग–अलग स्पष्ट की गई है। नई शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 4.28 में स्पष्ट किया गया है कि छात्रों को नैतिक निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया जाएगा। बुनियादी एवं संवैधानिक मूल्यों जैसे सेवा, सत्य, अहिंसा, सम्मान, समर्पण, धैर्य, सहिष्णुता, शिष्टाचार इत्यादि गुणों के विकास पर बल दिया जाएगा। इसी प्रकार अध्याय 5 में शिक्षक की भूमिका भी स्पष्ट की गई है जिसमे छात्रों के समक्ष स्वयं को आदर्श के रूप में स्थापित कर सकें।

गुरु शिष्य परंपरा हमारे देश का गौरव है और जनमानस को ही इस गौरव को बनाए रखना है

डॉ. ममता भटनागर
सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय, प्रयागराज

भारतीय संस्कृति और गुरु शिष्य परम्परा

''गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागो पाय
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय''।।

गुरु की महत्ता इन दो पक्तियों में स्वतः स्पष्ट है। गुरु का स्थान गोविन्द से भी बड़ा है।

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुदेवो महेश्वरः , गुरु साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।

गुरु ही ब्रह्मा (रचयिता) है, गुरु ही विष्णु (पालक) है और गुरु ही महेश्वर (संहारक) है। हमारी भारतीय संस्कृति में गुरु इस परम् रुप से सुशोभित है। गुरु एक कुम्हार के समान होता है जो अपने शिष्य रुपी माटी को अपने ज्ञान गुण द्वारा आकर्षक घड़े का रुप दे देता है।

''सब धरनी कागज करुं लिखनी सब बनराय, सात समुद्र की मसि करुं गुरु गुण लिखा न जाय''।

गुरु की महिमा ऐसी है कि यदि सम्पूर्ण धरती को कागज का रुप दे दिया जाय और वन की जितनी भी लकड़ियाँ हैं उनकी लेखनी बना लिया जाय और सात समुद्र के अथाह जल को स्याही के रुप में प्रयुक्त किया जाए फिर भी गुरु गुरु महिमा को नहीं लिखा जा सकता।

गुरु शब्द अपने आप में महिमा मूलक है। हमारे शास्त्रों में 'गु' शब्द का अर्थ 'अंधकार या अज्ञान' बताया गया है जबकि 'रु' का अर्थ 'निरोधक' बताया गया है इस प्रकार गुरु का अर्थ है अज्ञानता का नाश करने वाला, अंधकार को मिटाने वाला।

प्राचीन समय में गुरु का अत्यधिक महत्व था। शिष्य चाहे जितने प्रतिष्ठित परिवार या कुल का रहता था उसे विद्यार्जन के लिए गुरु के पास जाना रहता था। श्री राम समेत भाइयों का गुरु वशिष्ठ के आश्रम जाना, श्री कृष्ण का गुरु संदीपनी के यहाँ जाना इसका प्रमाण है। गुरु के प्रति निष्ठा का सर्वोत्तम उदाहरण एकलव्य का चरित्र है। अपने उस गुरु के लिए जिन्होंने उन्हें शिक्षा देने से भी मना कर दिया था, उनकी प्रतिमा बनाता है और धनुष विद्या में निपुण बनता हैं और फिर उसी गुरु के कहने पर अपने दाहिने हाथ का अंगुठा गुरुदक्षिणा में दे देता है, गुरु निष्ठा का इससे बड़ा उदाहरण हो ही नहीं सकता।

आज की स्थिति यह है कि ना विद्या का वह स्वरुप रहा, ना गुरु का और ना शिष्य का। सभी व्यवसाय का रुप ले चुके है औपचारिकता मात्र रह गयी है, शिष्य जिसने अब छात्र का रुप ले लिया है शुल्क देता है जिसे लेकर गुरु जीवनोपयोगी शिक्षा प्रदान कर रहा है। वह श्रद्धा आदर भाव विलुप्त हो गया है पारिवारिक, सामाजिक संस्कार, शैक्षिक स्वरुप में परिवर्तन इसके मुख्य कारण है।

इस औपचारिक सम्बन्ध में बदलाव लाकर गुरु की गरिमा को पुनः प्राप्त किया जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि सर्वप्रथम एक सम्मानीय भाव गुरु के प्रति घर के संस्कारों से मिले। गुरु की भूमिका यह होनी चाहिए कि वह शिष्य का विकास एक व्यवसाय के तौर पर नहीं अपितु उसके व्यक्तिगत शैक्षिक, नैतिक, आत्मिक, विकास में महती भूमिका निभाए।

दिव्य ज्ञान की ज्योति जलाकर, मन को आलोकित कर दो
मुझको विद्या का धन देकर , जीवन को सुख से भर दो।

डॉ. कल्पना मिश्रा, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय, प्रयागराज

हिन्दुस्तानी तहज़ीबः उस्ताद और शागिर्द की रिवायतें

इंसानी ज़िन्दगी और उसकी तरक़्क़ी की मंज़िलें गोया एक तर्जुबा है और इसी तर्जुबे को दशा और दिशा देना उसको सही राह तक पहुचाने में जो रोशनी काम करती है उस रोशनी का नाम है 'उस्ताद' हिन्दी में 'गु' के माने तारीकी (अंधेरा) और 'रू' के माने रौशनी यानी की उस्ताद वो हुआ जो किसी को अधेरे से रौशनी की तरफ ले जाता है। उस्ताद के बारे में हज़रत अली का क़ौल है :– **"जिससे मैने एक हर्फ (शब्द) भी सीखा है वो मेरा उस्ताद है"** अगर इसी ख़्याल की रोशनी में बातें करें तो एक 'हर्फ' (शब्द) जिससे भी सीखा वह उस्ताद के दर्जे का हक़दार है ऐसे में हम यह बात पूरी ईमानदारी से कह सकते हैं हमारी हिस्दुस्तानी तहज़ीब में इल्म सीखाने के फन ने वाकिफ कराने का नाम है उस्ताद यानी उस्ताद इल्म की पहली सीढ़ी है। किसी ने क्या खूब कहा है – **देखा ना कोह कन कोई फराहाद के बग़ैर। आता नहीं है फन कोई उस्ताद के बग़ैर।।** ऐसे में उस्तादों का एहतराम और उसके वक़ार को इज़्फ़त बख़्शनें की रिवायतें हमारे यहा हर जगह देखने को मिलती है किसी ने एक अच्छे उस्ताद के बारे में क्या खूबसूरत बात कही है – **जिनके किरदार से आती है सदाक़त की महक, उनकी तदरीस से पत्थर भी पिघल जाते है।** कहा जाता है उस्ताद बादशाह नहीं होता लेकिन बादशाह गर ज़रुर होता है अपने शार्गिद को बादशाह तो बना ही देता है अपनी शख़्सियता का रंग उसमें चढ़ा देता है तभी कोई न कोई शार्गिद अपने उस्ताद की किसी न किसी ख़ूबी को अपना आइडियल बना कर उसे अपनी ज़िन्दगी में अपनाने की कोशिश करता है। और अपने उस्ताद पर फख्र भी करता रहता है मीरतक़ी मीर उर्दू ग़ज़ल के बादशाह हैं उनके शार्गिद रासिख़ अज़ीमाबादी अपने उस्ताद पर नाज़ करते है कहते हैं– **शार्गिद है हम 'मीर' से उस्ताद के रासिख़।उस्तादों का उस्ताद है उस्ताद हमारा।** ख़्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली जो कि ग़ालिब के शर्गिद थे, उन्होंने ग़ालिब की मौत पर जो मर्सिया लिखा। उसमें ग़ालिब की अहमियत, मर्तबा और एक उस्ताद की मोहब्बतें, इनायतें सब शामिल हैं कुछ पक्तियाँ देखते है : **या बिसात ए सुख़न में शातिर एक।हमको चालें बताएगा अब कौन, शेर में ना तमाम है हाली। ग़ज़ल अब इसकी बनाएगा कौन।** इसी के साथ ही साथ मिर्ज़ा गालिब का यह शेर देखते चले –**रेख़्ता के तुम्ही उस्ताद नहीं हो ग़ालिब। कहते है अगले जमाने में कोई मीर भी था।**

सच बात तो यह है कि उस्ताद अपनी रौशनी से शार्गिद को रौशन करता है अमीर इमाम क्या ख़ूबसूरत बात कहदी :–**देखना क्या है, नज़र अंदाज़ करना है किसे।मंज़रों की ख़ुद–ब–ख़ुद पहचान होती जाएगी। आते आते इश्क़ करने का हुनर आ जाएगा। रफ़्ता रफ़्ता ज़िन्दगी आसान होती जाएगी।** मेरे ख़्याल में शायद अमीर इमाम यह कहना चाहते है कि इल्म दरासल इश्क है और इश्क़ आसिमित है उसको कही कुज़े में बंद नहीं किया जा सकता। दरासल हर तर्जुबा इश्क़ की मंज़िल की तरफ अग्रसरित है और यह इश्क़ इल्म की इंतेहा है ग़ालिब ने तो कहा है हर वो सीख जो तर्जुबे से आती है किसी उस्ताद की नसीहत से कम नहीं इश्क के बारे में तो कबीर दास जी भी कह देते है बिला झिझकः **पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढ़ाई आख़र प्रेम का पढ़ें सो पंडित होय** ।और मीर क्या कहते हैं इश्क़ पर :– **ये फन–ए–इश्क़ है आवे उसे तीनत में जिसकी हो, तू ज़ाहिद पीर–ए–नाबालिग है बे – तह तुझ को क्या आवे।** कबीर की तरह सिराज औरंगाबादी भी इल्म की इंति इश्क़ है यानी इल्म की आख़िरी मंज़िल इश्क़ है कहते हैं – **वो अजब घड़ी थी मैं जिस घड़ी लिया दर्स नुस्खा–ए–इश्क़ का कि किताब अक़्ल की ताक़ पर ज्यूँ घटी थी त्यू ही धरी रहीं।** और इन सब शायरो से जुदा बात हमारे जौन एलिया साहब फरमाते है कि उस्ताद और शार्गिद की अज़्मत से परे मुझे जहा तक महसूस होता हे जौन की शायरी के लिये जो हज़रत अली के कौल (जिसने भी मुझे एक हर्फ भी सीखाया वो गोया मेरा उस्ताद है) वो इसी ख्याल को लेकर चलते है – **जौन जुदा तो रहना होगा तुझको अपने यारो के बीच।यार ही तू यारों का नहीं है यारों का उस्ताद भी है।**इस तरह हम कह सकते हैं कि उस्ताद और शार्गिद गोयां। इल्म और इश्क़ की मंज़िल है और इसी इश्क, इसी मोहब्बत के स्कूल को हमें आम करना है जिगर मुरादाबादी के इस मोहब्बत के पैग़ाम के साथ अपनी बात खत्म करना चाहूँगी। **उनका जो फ़र्ज़ है वो अहल–ए–सियासत जानें मेरा पैग़ाम मोहब्बद है जहाँ तक पहुँचे।**

डॉ ताहिरा परवीन असिस्टेंट प्रोफेसर, उर्दू विभाग

Teachers : The Precursors of Illuminating minds in View of Derozio

Society is built on certain ethics and disciplines. Human beings, the integral part of society, have to follow all the requisite traditions and values to erect an ideal place to live in. Now the question is who is the mentor or guide to upright the human behaviour? Obviously the teachers are the precursors of illuminating minds. They are the torch bearers to enlighten the ways of humanity. They are truly the nation builders. The teachers play important role in the lives of their students. No doubt their relationship is wonderful. There are many literary texts that talk about this beautiful bond of teachers and students. Herein I would love to mention an emotional poem entitled "To The Pupils" composed by Henry Louis VivianDerozio who is a well known name in the field of literature. Derozio was a great poet, thinker and an excellent teacher. He was appointed as a teacher at the Hindu College of Bengal at the age of 17. His intense passion and zeal for teaching impacted his students a lot. He inculcated the spirit of liberty, equality and freedom in his students and brought intellectual revolution in Bengal. His love forstudents is exhibited in his poem "To The Pupils" where he addresses his loving students –

Expanding like the petals of Young Flowers,
I watch the gentle opening of your mind,
And the sweet loosening of the spell that binds
Your intellectual energies and powers,
That stretch (like young birds in soft summer hours)
Their wings, to try their strength,
O! now the winds
Of circumstances and freshening April showers
Of early knowledge and unnumbered kinds
Of new perceptions, shed their influence;
And how you worship Truth's omnipotence.
What joyance rains upon me, when I see
Fame in the mirror of futurity,
Weaving the chaplets you have yet to gain-
And then, I feel I have not lived in vain.

This poem is a beautiful sonnet that emphasizes the idea that students are endowed with strength of intellect and just like the petals of young flowers they expand their wisdom gradually. The poet emerges as a keen observer who visualizes the future glory of his students. This very thought leads him to the contentment that his life has been a significant one to enlighten the lives of students.

Dr. Ruchi Malaviya, Assistant Professor, Dept. of English

GURU AND SHISHYA BONDAGE

Guru and Shishya are two terms,
Interlocked in communion with each other.
They exist without any barriers,
For it knows no bondages and boundaries.

Guru and Shishya is a Presence,
That gracesus with freedom,belongingness,
Stillness,fullness,emptiness and love.
Instilling a bondage which is fearless in essence.

Life on this earth abounds with do’s and don’ts,
This decorum exists only in the eyes of the external world.
A true relationship between the Guru and Shishya
Abounds in love with no judgements.

The pilgrimage of shishya’s life is Dhyan,
Which culminates and begins at the feet of his Guru.
Every word uttered by Guru is a Mantra,
A codified energy that leads to Moksha.
Moksha means a renunciation of this materialistic world.
Devoutness and devotion to the Guru is the renunciation of the self.
Liberation of the soul is just an illusion,
For Guru is the ultimate wisdom of Divine creation.

Guru awakens awareness to the Vasanas
Our latent tendencies lying dormant within us.
Dissolution of evils happens through deep surrender,
By the grace of Guru’s compassion and love.

GURU AND SHISHYA BONDAGE

Guru is Brahma,without four heads,
Guru is Vishnu,without four arms,
Guru is Shiva,without three eyes.
Guru is Par-A-Brahma, which remains unmanifest.

The divinity in the relationship designs,
The herbs that grow is Sanjeevanibuti,
The air we breathe is the Pranavayu,
The food served is Prasad of the Divine,
The water consumed is Amrit.

A Guru abstains from materialism.
He opens the doorways of subtler dimensions.
He exudes the glow and attraction of Yog,
His words become magical and Divine manifestation.

Do we find devoted shishya'sin the contemporary times?
Who posses this divine wisdom of Guru Tattva?
Can they absolve their ills and evils,
Effortlessly through the intention and attention of their Divine Guru?.

We are caught in the web,
Of our own distortions and Karmic patterns.
Our we able to amplify our happiness,
Fearlessly, without effort from our sense organs?

Meditation and Yog with your Guru,
Manifests abundance and fullness within and without.
Which assimilates knowledge, translating into wisdom,
Awakening your soul, releasing energies and rejuvenating your true Self.

DR.NEERJA SACHDEV, Dept of English (retired)

भारतीय संस्कृति और गुरु शिष्य परम्परा

तैत्तरीय उपनिषद के शिक्षावल्ली के 11 वें अनुवाक में मिलता है कि आचार्य किस प्रकार स्नातक को भावी जीवन का उपदेश करते थे। इसे दीक्षान्त उपदेश कहा जा सकता है। दीक्षा के बाद आचार्य अपने शिष्य से आशान्वित पूरे जीवन का मर्म वाणी में समेट लेता है, भावी पथ प्रशस्त करता है, जीवन की कर्मठता के लिए उन शिक्षाओं को पुनः याद दिलाता है जिसके लिए उसने अपने शिष्य को घिस घिस कर पारस बनाने में कोई कसर नही छोडी थी। आचार्य संसारिक जीवन में प्रवेश कर पुनः उन शिक्षाओं को जीवन पर्यन्त अपनाने का दीक्षानत उपदेश देता है।

''सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम् । कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम् ।''

अर्थात् सत्य बोलना। धर्म के मार्ग पर चलना। स्वाध्याय करने में आलस्य मत करना। आचार्य को उनकी प्रिय वस्तु देना और सन्तान रूपी तन्तु का विच्छेद मत करना (अर्थात उच्छृंखल जीवन मत जीना)। सत्य के प्रति प्रमाद मत करना। धर्म (कर्तव्य) के मार्ग पर चलने से प्रमाद न करना। कल्याणकारी कार्यों को करने से प्रमाद मत करना। संसाधनों के विकास में प्रमाद न करना।

''स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वया उपास्यानि नो इतराणि। ये केचास्मच्छ्रेयांसो ब्राह्मणाः तेषां त्वया आसनेन प्रश्वसितव्यम्। श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया अदेयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्।''

स्वाध्याय और प्रवचन (शिक्षण) में प्रमाद न करें। देवकार्य तथा पितृकार्य से प्रमाद नहीं किया जाना चाहिए। माता को देवता मानना। पिता को देवता मानना। आचार्य को देवता मानना। जो अनिन्द्य कर्म हैं उन्हीं का सेवन करना, अन्य का नहीं। हमारे (आचार्यों के) जो—जो कर्म अच्छे आचरण के द्योतक हों, केवल उन्हीं की उपासना करना, दूसरे कर्मों का नहीं। हमसे जो अधिक श्रेष्ठ सच्चरित्र ब्रह्मज्ञानी (विद्वान) मिलें उनकी उपासना करना (अन्धश्रद्धा मत करना; अपनी बुद्धि पर भरोसा करके विवेक से काम करना)। श्रद्धापूर्वक दान करना। बिना श्रद्धा के दान नहीं करना। अपनी सामर्थ्य के अनुसार उदारतापूर्वक दान देना। विनम्रतापूर्वक (ह्रिया) दान देना।इस भय से दान देना चाहिये कि दान नही करूँगा तो भगवान को क्या मुँह दिखाऊँगा। विदा (ज्ञानपूर्वक, विधिपूर्वक, आदर एवं उदारतापूर्वक निस्वार्थ भाव से) दान देना ये (प्रमाद से, उपेक्षापूर्वक नही)।

विद्यार्थियों को जीवन में कामयाब होने के लिए उपनिषद की यह दीक्षान्त शिक्षा स्वस्थ जीवन के निर्वहन में आज भी उपयोगी है।

संकलन कर्त्री, डॉ मीनू अग्रवाल, एसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग,

दीक्षान्त उपदेश – उपनिषद काल

भारतीय संस्कृति और गुरु शिष्य परम्परा

उद्दालक ने अपने पुत्र श्वेतकेतु को बड़ी उम्मीदों से गुरुकुल भेजा। वहां श्वेतकेतु पूरे मनोयोग से शिक्षा ग्रहण करने लगा। धीरे–धीरे उसकी कीर्ति फैलने लगी। बड़े–बड़े विद्वान भी उसकी दृष्टि की बारीकी देख दांतों तले उंगलियां दबा लेते थे। दिन बीतते गए और फिर वह दिन भी आया जब श्वेतकेतु गुरुकुल में अपनी शिक्षा पूर्ण कर घर लौट आया। आरुणि ने प्रसन्नतापूर्वक अपने पुत्र का स्वागत किया। दो–तीन दिन बाद एक सुबह पिता आरुणि उद्दालक ने श्वेतकेतु से कहा, 'पुत्र, क्या तुम अभी और वेदाभ्यास करने के इच्छुक हो या उपयुक्त कन्या से विवाह करके गृहस्थ जीवन शुरू करोगे?' पिता की बात सुनकर श्वेतकेतु बोला, 'मेरा ज्ञान गुरुकुल में साथ वेदाभ्यास करने वाले सहपाठियों ने देखा है, लेकिन दुनिया ने अभी नहीं देखा है। मैं चाहता हूं कि दुनिया भी मेरे ज्ञान से परिचित हो जाए। यह तभी होगा जब मैं राजा जनक की सभा को जीत लूंगा। इससे पहले विवाह करना मेरे लिए उचित नहीं होगा।'

पुत्र के मुंह से ऐसा सुन ऋषि बिना कुछ बोले वहां से उठ गए। श्वेतकेतु की मां ने पूछा आप परेशान क्यों हैं?' ऋषि उद्दालक बोले, 'श्वेतकेतु ने वेदों का अभ्यास चाहे जितना भी किया हो, वेदों के मर्म से वह बिल्कुल अछूता है। विद्या अगर अहंकारयुक्त महत्वाकांक्षा को बढ़ाती है तो वह विद्या हो ही नहीं सकती। श्वेतकेतु को पहले विद्या की पात्रता हासिल करनी होगी तभी वह वेदों के मर्म तक पहुंचेगा।'

संकलन कर्त्री, डॉ मीनू अग्रवाल,

प्रेरक पौराणिक प्रसंग

भारतीय संस्कृति और गुरु शिष्य परम्परा

वेदव्यास के पुत्र शुकदेव पिता के कहने पर राजा जनक को अपना गुरु बनाने के लिए चल दिए लेकिन मन में संशय भी था। वह सारे रास्ते सोचते रहे कि कहाँ राजा जनक और कहाँ मै। वह भोगी और मै योगी। वह राजा और मै ऋषि। वह गृहस्थ और मै त्यागी। वह मेरे गुरु कैसे बन सकतें हैं।

जब शुकदेव राजा जनक के पास पहुँचे तो उन्हें द्वार पर प्रतीक्षा करने को कहा गया। कुछ दिन बाद राजा जनक ने उन्हें महल में बुलवाया। उसी समय महल में आग की सूचना मिली। द्वारपाल ने कहा महाराज आग तो कक्ष तक आ पहुँची। राजा जनक शान्त रहे। शुकदेव ने सोचा कि राजा अपने वैभव और सम्पदा को बचाने तक का प्रयास नहीं कर रहे मै तो अपनी जान बचाउॅ। ज्यों ही शुकदेव भागने लगे, आग शान्त हो गई। राजा जनक बोले – तुम मुझे भोगी समझते हो, मेरा तो सब कुछ स्वाहा हो गया । तुमसे तो इस कमण्डलु का भार तक नहीं सम्हाला गया बताओं कौन त्यागी है।

शुकदेव का मोह भंग हुआ। गुरु से दीक्षा लेकर शुकदेव घर पहुँचे तो पिता ने पूछा :

गुरु कैसे है क्या सूर्य के समान हैं

नहीं पिताजी, सूर्य में तो आग है

तो क्या चन्द्रमा सी कान्ति है

नहीं पिताजी, चन्द्रमा मे तो दोष है

तो गुरु दिखने में कैसे हैं

वह किसी के जैसे नहीं है , गुरु तो केवल गुरु हैं।

पिता जान गए कि गुरु ने शिष्य के अहंकार का पर्दा गिरा दिया है।

संकलन कर्त्री , डॉ मीनू अग्रवाल,

प्रेरक पौराणिक प्रसंग

गुरु की महिमा

गुरु बिनु भवनिधि तरइ ना कोई, जो विरंचि संकर सम कोई।

– तुलसीदास

''जीवन का मकसद गुरु के बिना सम्पूर्ण नहीं होता। गुरुशिष्य परम्परा ने समाज को श्री राम और श्री कृष्ण के आदर्श दिए। अर्जुन और कर्ण जैसे योद्धा दिए। अगर गुरु द्रोण नहीं होते तो अर्जुन इतने महान योद्धा नहीं बनते, चाणक्य नहीं होते तो चन्द्रगुप्त इतने बड़े विजेता नहीं बनते स्वामी विवेकानन्द के बनने में रामकृष्ण परमहंस की भूमिका उल्लेखनीय है। इसका अर्थ है जब गुरु और शिष्य दोनों की तरफ से स्नेह, सम्मान और समर्पण होगा तभी समाज में महापुरुष का प्रादुर्भाव होगा।

पुराणों में एक प्रसंग आता है विष्णु नारद कथा का एक बार की बात है नारद जी विष्णु भगवान से मिलने गए। विष्णु ने उनका बहुत सम्मान किया। जब नारद जी वापस गए तो विष्णु ने कहा लक्ष्मी जिस स्थान पर नारद बैठे थे उस स्थान को गाय के गोबर से लीप दो। विष्णु के यह कथन करते समय नारद बाहर ही खड़े थे उन्होंने सब सुन लिया और वापस आ कर विष्णु जी से पूछा, भगवान मेरे आने पर आपने खूब सम्मान किया पर जब मैं जा रहा था तो आपने लक्ष्मी जी से यह क्यों कहा कि जिस स्थान पर नारद बैठे थे उस स्थान को गोबर से लीप दो? भगवान ने कहा कि मैनें आपका सम्मान इसलिए किया कि आप देव ऋषि हैं, और देवी लक्ष्मी से ऐसा इसलिए कहा क्योंकि आपका कोई गुरु नहीं हैं। बिना गुरु का व्यक्ति जिस स्थान पर बैठ जाता है वह अपवित्र हो जाता है। यह सुनकर नारद ने कहा – आपकी बात सत्य है पर मैं किसे गुरु बनाऊं? नारायण बोले – धरती पर चले जाओं जो व्यक्ति सबसे पहले मिले उसे अपना गुरु मान लो।

नारद जी प्रणाम कर धरती पर चले गए। उन्हें सबसे पहले मछली पकड़ने वाला एक मछुवारा मिला। नारद जी वापस विष्णु के पास गए और कहा वह मछुवारा तो कुछ भी नहीं जानता मैं उसे गुरु कैसे मान सकता हूँ? यह सुनकर भगवान ने कहा अपने वचन पूरे करों। नारद जी ने वापस आकर मछुवारा से कहा तुम मेरे गुरु बन जाओं, पहले वह नहीं तैयार हुआ लेकिन बहुत अनुरोध करने पर वह मान गया। नारद ने पुनः लौटकर वही शंका प्रकट की, मेरे गुरु को कुछ आता नहीं वह क्या हमे सिखाएगें। यह सुनकर विष्णु क्रोधित हो गए और उन्होंने श्राप दिया कि गुरु निन्दा करते हो? अब तुम्हें 84 योनियों में घूमना पड़ेगा। यह सुनकर नारद ने कहा भगवान इस श्राप से बचने का उपाय भी बता दीजिए। विष्णु ने कहा जाकर अपने गुरुदेव से पूछों। नारद जी ने सारी बाते अपने गुरुदेव को बताई। गुरुदेव ने कहा भगवान से कहो 84 योनियों का चित्र धरती पर बना दे फिर उस पर लेट कर गोल घूम लेना और विष्णु जी से कहना 84 लाख योनियों में घूम आया मुझे क्षमा कर दीजिए, आगे से गुरु निन्दा नहीं करूगा। नारद जी ने ऐसा ही किया। विष्णु ने कहा देखा नारद जिस गुरु की निन्दा कर रहे थे उसी ने मेरे श्राप से बचा लिया। नारद जी गुरु की महिमा अपरम्पार है। इसलिए –

गुरु गूंगे गुरुबाबरे गुरु के रहिए दास, गुरु जो भेजे नरक को स्वर्ग कि रखिए आस।।

अतः गुरु शिष्य परम्परा में गुरु के प्रति श्रद्धा अनिवार्य तत्व है, चाहे प्रथम दृष्टया गुरु कैसे भी प्रतीत हों।

संकलन कर्त्री , डॉ मंजरी शुक्ला

प्रेरक पौराणिक प्रसंग

Vichar Vimarsh

Celebrating the SHIKSHAK PARVA

Special Lecture organized by IQAC

The special lecture was delivered by **Prof. Anjali Bajpai, Department of Education, Banaras Hindu University, Varanasi.** This lecture was organized exclusively for the faculty members of the college. In her deliberation, Prof. Bajpai explained those significant points of NEP 2020 upon which faculty members need to pay special attention. She described in detail that how the role of teachers is going to be changed after implementation of NEP 2020. She also discussed the difference between 1 year B.Ed., 2 year B.Ed. and 4 year Integrated B.Ed. course.

She also discussed about the ways to improve teacher education such as: All teacher education programmes to be conducted within composite multidisciplinary institutions New and comprehensive National Curriculum Framework for Teacher Education NTA testing for admission to B.Ed. Merit based scholarship for 4 year B.Ed. Integrated course Only educationally sound, multidisciplinary and integrated teacher education programmes to be made available Stringent action against sub-standard stand-alone Teacher Education Institutions Setting up of National Mission for mentoring with a large pool of outstanding senior/retired faculty She also discussed about the various means and ways to empower teachers. The resource person was welcomed by the Principal Prof. Lalima Singh and vote of thanks was proposed by IQAC coordinator Dr. Manjari Shukla.

Celebrating the SHIKSHAK PARVA

"L'enseignants 2022"

A cultural program was organised by the pupil teachers of B.Ed Faculty and the students of Law Faculty. The celebration began with a Saraswati Vandana through dance and sign language, a mime act on the journey of education from 1980s to the present, Qawwali based on the experiences of a student, classical dance, self composed poetry recital by students of commerce and B.Ed Faculty, Speech by an NCC Cadet and some fun games for the teachers was conducted by Kashish. The Principal delivered a motivating speech and praised the efforts of the students. Justice Arun Tandon congratulated the students for their performance and applauded their organisational abilities. The teachers present in the Auditorium were overwhelmed by the zeal and enthusiasm with which the students performed and presented the program and expressed their gratitude.

FILM SCREENING BY IQAC 7 SEPTEMBER 2022

As per the directive of UGC (Letter No: D.O. No. 2-79/2022(CPP-II) dated 25th August 2022), the IQAC of College organized screening of educational/motivational film on 7th September, 2022. The program was conducted under the aegis of *Shikshak Parv* celebration (5th-9th September, 2022). A **documentary on Dr. Sarvapelli Radhakrishnan** was shown to the students in the college auditorium-Pathshala. In order to motivate girl students to dream high, work hard and hold the courage to face the challenges in life another fil: **'Shabash Mithu'** was also shown the students. 139 students alongwith faculty members enjoyed the program. At the end of the movie feedback was also collected from the students.

Celebrating the SHIKSHAK PARVA

एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय में शिक्षक पर्व आयोजन श्रंखला में दिनांक 08.09.2022 को उर्दू विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम “Role of Teachers in Nation Building” विषय पर उर्दू विभाग की छात्राओं ने अपनी–अपनी प्रतिभागिता दर्ज करायी। छात्राओं ने ग़ज़ल, नज्म, और उस्ताद की अज़मत पर अपने–अपने ख्याल को पेश किया, निर्णायक मण्डल द्वारा प्रतिभागिता करने वाले को प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सान्त्वना पुरस्कार से नवाज़ा गया। प्रथम पुरस्कार ग़ौसिया इरशाद द्वितीय पुरस्कार उज़मा ग्यास और अर्शिया तृतीय पुरस्कार मुस्कान ख़ानम, सान्त्वना पुरस्कार अलफिया संसूरी मोहसिना काज़मी को दिया गया। कार्यक्रम में प्राचार्या प्रो. लालिमा सिंह ने एक शेर के माध्यम से छात्राओं की हौसला अफज़ाई की।

निर्णायक मंण्डल में डॉ. रितु जायसवाल एवं सौम्या कृष्ण एवं पुरस्कार वितरण डॉ. मंजरी शुक्ला एवं ज्योति कपूर के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ताहिरा परवीन धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अरीफा बेगम ने किया। इस अवसर पर डॉ. रिया मुखर्जी, डॉ. वैभव, डॉ. आदित्य, डॉ. प्रखर उपस्थित थे।

जिनके किरदार से आती है सदाक़त की महक। उनकी तदरीस से पिघल जाते है पत्थर।

Celebrating the SHIKSHAK PARVA

Film Screening of 'Pride and Prejudice'

Department of English organised a film screening of Pride and Prejudice on 06.09.2022 on the occasion of Shikshak Parv. The students of B.A. III and M.A. Sem I participated in this event. Ms. Heba of B.A. III introduced the story and plot structure, Ms. Insha Siddiqui of B.A. III introduced the audience to the themes and important ideas in the novel. Ms. Ana moderated the event.

Total student participation: 93
Total Faculty participation: 05

Celebrating the SHIKSHAK PARVA

Student Corner

Book Reading Competition by Literary Association
7 September 2022

Literary Association organised a book reading competition on 07.09.2022 on the occasion of Shikshak Parv. The students of B.A. III and M.A. Sem II participated in this event. Ms. Pushpita Banerjee of B.A. III moderated the event. The students were welcomed by Dr. Riya Mukherjee and the vote of thanks was extended by Dr. Saumya Krishna. Dr. Jyoti Kapoor inspired the students with her encouraging words. Dr. Ruchi Malaviya and Dr. Tahira Parveen announced the winners. Dr. Jyoti Kapoor, Dr. Ruchi Malaviya, Dr. Arifa Begum and Dr. Kalpana Mishra judged the event. Also present on the occasion were Dr. Preeti Yadav and Dr. Priyanka Gupta.

- 1st - Ms. Heba Mehsi and Gausiya Irshad
- 2nd - Ms. Saliheen Fatima and Ms. Insha Abbas
- 3rd - Ms. Shivanjali Kesarwani and Ms. Nancy Verma
- Consolation—Ms. Neha Singh of M.A. Sem II and Ms. Neha Singh of B.A. III

The students spoke on inspirational stories of A.P.J Abdul Kalam, Shankaracharya, poets like Rabindranath Tagore and Robert Frost, Kaisar Hayat.

Total student participation: 13
Students in the Programme: 33
Total Faculty participation: 11

Celebrating the SHIKSHAK PARVA

Student Corner

An Exhibition on the contribution of Teachers in Indian Knowledge System

Organised by

Pupil Teachers

Of

Dr. Madhu Tandon B.Ed Faculty

9th September 2022

निर्देशक, मुख्य सम्पादक

प्राचार्या प्रो. लालिमा सिंह

सम्पादक

डॉ मीनू अग्रवाल, संयोजक, यूजीसी समिति
डॉ मंजरी शुक्ला, संयोजक, आई.क्यू.ए.सी.

,

आलेख

- डॉ हरीश कुमार सिंह, शिक्षाशास्त्र विभाग,
- डॉ रश्मि सिंह, शिक्षाशास्त्र विभाग,
- डॉ नीता साहू, शिक्षाशास्त्र विभाग,
- डॉ पार्थ डे, संगीत वादन विभाग,
- डॉ विनीता मिश्रा, मध्यकालीन इतिहास विभाग
- डॉ शिवशंकर श्रीवास्तव, मध्यकालीन इतिहास विभाग
- डॉ आलोक मालवीय, वनस्पति विज्ञान विभाग,
- डॉ ममता भटनागर, शिक्षक शिक्षा विभाग
- डॉ कल्पना मिश्रा, हिंदी विभाग
- डॉ ताहिरा परवीन, उर्दू विभाग
- डॉ रूचि मालवीय, अंग्रेजी विभाग
- डॉ मंजरी शुक्ला, दर्शनशास्त्र विभाग,
- डॉ मीनू अग्रवाल, प्राचीन इतिहास विभाग

कविता

- डॉ नीरजा सचदेव, अवकाश प्राप्त, अंग्रेजी विभाग,

संकलन, प्रेरक प्रसंग

- डॉ मीनू अग्रवाल एवं डॉ मंजरी शुक्ला

रिपोर्ट

- डॉ ज्योति बैजल, बी.एड. संकाय

गतिविधियॉ

- **विचार विमर्श,** विशेष व्याख्यान, आयोजक, डॉ ज्योति बैजल, डॉ तनुश्री रॉय, डॉ सिप्पी सिंह,
- **छात्र विमर्श**, आयोजक, उर्दू विभाग
- **पुस्तक पठन प्रतियोगिता**, आयोजक, साहित्य परिषद
- **प्रेरणा, शाबाश मीठू** फिल्म प्रदर्शन, आयोजक आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ एवं फिल्म स्कीनिंग, **प्राइड एंड प्रीजूडिस,** अंग्रेजी विभाग
- **सांगीतिक प्रस्तुति**, छात्राध्यापिकाएँ, बी. एड, संकाय
- **प्रदर्शनी** ,छात्राध्यापिकाएँ, बी. एड, संकाय